प्रश्न - सिख पंथ का परिचय देते हुये इसकी विशेषताओं को स्पष्ट करें।

उत्तर - सिख पंथ के पहले गुरु गुरुनानक देव का जन्म 1469 में हुआ था। उस समय भारतवर्ष में लोधी वंश का शासन था। वह समय भारत के वैचारिक उथलपुथल का समय था। अनेक साधु संत, विचारको के साथ साथ धार्मिक और दार्शनिक विचार धाराओ का प्रभाव जनमानस में था, साधु संतो के अलावा सिद्ध, नाथ और तंत्र साधक तथा भक्त अपने अपने विचार धाराओ के साथ भ्रमण करते थे। गुरुनानक देव का गाँव उस स्थान पर था जहां सभी प्रकार के साधकों की आवाजाही तथा विश्राम करने का स्थल था। गुरुनानक अपने गाँव की टोली के साथ इनकी सेवा करते और उनके विचार, उपदेशो से देश की अवस्था का चिंतन करते थे।

गुरुनानक देव जी ने देखा कि धर्म के नाम पर जनमानस का भावनात्मक शोषण किया जाता है और धार्मिक पाखण्ड और व्यर्थ के कर्मकांड को धर्म कहा जाता है। तब उन्होंने निश्चय किया कि धर्म के सही अर्थ की व्याख्या करेगे और धार्मिक पाखण्ड के प्रति लोगो को जागरूक करेगे। उन्होंने अपने दो सहयोगियों के के साथ लंबी लंबी यात्राएं प्रारंभ कर दी

उन्होने देखा कि सुयोग्य और प्रतिभाशाली व्यक्ति साधु बनकर राख लगा कर बैठे है और देश, धर्म के प्रति अपने कर्तव्यों से पलायन कर लिया है। उन्होने ऐसे धर्म की परिकल्पना की जो जगत में रहकर अपने कर्तव्यों को पूरा करता है। धीरे धीरे उनके सामाजिक राजनैतिक आंदोलन से अच्छे लोग जुड़ते चले गए। उनके आंदोलन की प्रमुख विशेषता सामाजिक प्रतिबद्धता थी। उन्होने किसी नवीन पंथ के स्थापना की परिकल्पना नहीं की थी वे तो सिर्फ सुधार करना चाहते थे

अपनी परंपरा को जारी रखने के लिए उन्होने अपने शिष्य को दायित्व सौपा। वे सिखों के दूसरे गुरु गुरु अंगददेव थे। इस प्रकार सिख पंथ में कुल 11 गुरु हुऐ जिनके नाम इस प्रकार है।

पहले गुरु - गुरु नानक देव
दूसरे गुरु - गुरु अंगददेव
तीसरे गुरु - गुरु अमरदास
चौथे गुरु - गुरु रामदास
पांचवे गुरु - गुरु अर्जन देव
छठे गुरु - गुरु हरि~~राय~~ गोबिंद साहब
सातवे गुरु - गुरु हरिराय साहब
आठवे गुरु - गुरु हर कृष्ण साहिब

नवें गुरु - गुरु तेगबहादुर

दसवें गुरु - गुरु गोबिंद सिंह

११वें गुरु - गुरु ग्रन्थ साहिब

सिख पंथ के सभी गुरुओं ने सामाजिक धार्मिक सुधार का कार्य किए। सिख पंथ में गुरु नानक देव के समय हिंदुस्थान में बाबर का आगमन हुआ तथा गुरु गोबिंद सिंह के समय औरंगजेब का शासन था इस प्रकार सिख गुरुओं का पूरा समय मुगलकाल के समय था। मुगल बादशाह जहांगीर ने सिखों के 5 वे गुरु और उनके अनुयायियों को राजनैतिक शंका और इस्लाम कबूल न करने के कारण खौफनाक तरीके से शहीद कर दिया। इस घटना से सिख पंथ पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा और इस आंदोलन में भक्ति के साथ शक्ति का समावेश होने लगा, फिर जब औरंगजेब ने अपनी अन्यायपूर्ण नीतियों के कारण तथा इस्लाम कबूल न करने पर, सिखों के नवें गुरु गुरु तेगबहादुर को शहीद किया तब ~~इस~~ शान्तिप्रिय सिख ने एक नया चोला धारण किया। गुरु गोविन्द सिंह ने इन्हें अन्याय विरुद्ध युद्ध करने के लिए ~~सिख से~~ निडर बहादुर सूरमा खालसा बना दिया। गुरु गोविन्द सिंह ने ११वां गुरु किसी दैहिक मानव को ना बनाकर गुरुओं की शिक्षा

और उनके विचारों पर आधारित ग्रन्थ को ~~अब~~ सिखों का गुरु घोषित किया जिन्हें गुरु ग्रन्थ साहिब कहा गया और ~~सिखों के अलावा~~ इस ग्रन्थ में सिख गुरुओं के अलावा अनेक भक्तों, संतों की वाणी का संकलन है।

सिख पंथ की निम्नलिखित विशेषताओं से उसे स्पष्ट किया जा सकता है।

1. सिख पंथ एक ही ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करता है।
2. सिख पंथ भक्ति पर आधारित है परंतु शक्ति को भी वह भक्ति में शामिल करता है।
3. सिख पंथ धर्म निरपेक्ष है तथा सामाजिक प्रतिबद्धता उसका प्रमुख लक्ष्य है।
4. सिख पंथ जगत में अपने कर्तव्यों को सर्वोच्च सद्गुण ~~[illegible]~~ मानता है। ~~करते हुए मुक्ति के मार्ग की व्याख्या करता~~ है।
5. सिख पंथ जात पात, धार्मिक कर्मकांडों को अस्वीकार करता है।
6. सिख पंथ में सेवा को सर्वप्रमुख माना जाता है।

इन विशेषताओं की व्याख्या इस प्रकार है –

1 – सिख पंथ एक ही ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करता है – मूर्तिपूजा के नाम से शोषण तथा अलग

अलग देवी देवताओं के नाम से भेद, इन सब को देखकर गुरुनानक देव जी ईश्वर को एक ओंकार कहा अर्थात ईश्वर एक है वही सत्य है वह सृजनकर्ता है भय से परे निर्वैर है उसका जन्म नहीं होता उसकी अनुभूति गुरु के पास बैठकर की जाती है वह पहले भी था अभी भी है बाद में भी रहेगा। हांलांकि गुरु ग्रन्थ साहब में राम और कृष्ण के नामों का बारंबार उल्लेख है किन्तु उनके निर्गुण ईश्वरीय स्वरूप को ही मुख्य माना गया है।

२ – सिख पंथ भक्ति पर आधारित है परंतु वह भक्ति में शक्ति को शामिल करता है - गुरु ग्रन्थ साहिब में 6 सिख गुरुओं के साथ 15 संतो के शब्दों का भी संकलन है। ये संत भक्तिकाल के प्रमुख संत है जैसे कबीर, रैदास, भगत नामदेव आदि। इन गुरुओं और भक्तों की रचनाओं में भावना और भक्ति के उच्चतर स्तर और समर्पण के पद मिलते है।

सिख पंथ की स्पष्ट मान्यता है कि अपना शीश, अपनी बुद्धि का पूर्ण समर्पण ही मुक्ति का एकमात्र साधन है। तथा यह भक्ति द्वारा संभव है। चूंकि सिख पंथ मुगलकाल में विकसित हुआ था। अतः मुगलों से युद्ध करने के लिए उन्होंने इन्हीं समर्पित भक्तों की फौज तैयार की तथा पंथ में शक्ति को शामिल किया यह खालसा कहलाए, जो मरने से भी नहीं डरते थे।

इस प्रकार सिख पंथ में भक्ति के साथ शक्ति भी है।

3. सिख पंथ धर्म-निरपेक्ष है तथा सामाजिक प्रतिबद्धता उसका प्रमुख लक्ष्य है –

धर्म निरपेक्षता से मात्र अर्थ यह है कि सिख पंथ सभी धर्मों पंथो, मजहबों को समान मानता है तथा उनका आदर करता है उसके रोज की अरदास प्रार्थना में एक ~~शब्द~~ वाक्य आता है – तेरे भाणे सरबत दा भला अर्थात हे नानक मानव मूल्य और ईश्वर का नाम फैलता जाए और सारे मानवों का भला हो गुरु ग्रन्थ साहिब में गोविंद गोपाल, मुरारी, राम के साथ अल्लाह और खुदा की स्तुतियां भी दर्ज है कबीर के साथ बाबा फरीद की भी बाणी है इसके अलावा सिख पंथ का मूल लक्ष्य तात्कालीन समय में समाज स्थित समस्याओं के प्रति डटकर सामना करना, कर्तव्य पथ से विचलित ना होना भी है सिख पंथ की सामाजिक प्रतिबद्धता और कर्तव्य उसे गीता के उपदेशों के समुदय घोषित करती है। सभी गुरुओं ने समाज को बेहतर बनाने में अपना योगदान दिया है।

4 – सिख पंथ जगत में अपने कर्तव्य का पालन करते हुये मुक्ति के मार्ग की व्याख्या करता है –

सिख पंथ में तीन बातें हमेशा बतलाई जाती है –

किरत करों वंड छको नाम जपो अर्थात कर्म करो, बांटकर खाओ और उस ईश्वर का नाम जपो।
इसी से स्पष्ट हो जाता है कि कर्म करना, आपस में मिलकर रहना, अपने कर्तव्यों का पालन करना कितना प्रमुख है। गुरुनानक देव जी जब लंबी लंबी यात्राएं कर जागरण फैला रहे थे तब वे सुमेरु पर्वत पर जाकर महान सिद्धों से मिले, उन्होंने उनसे जो विचार विमर्श किया वह सिद्ध गोष्ठ कहलाता है। सिद्धों ने पूछा है नानक धरती का क्या हाल है। नानक ने जवाब दिया जब आप जैसे सुयोग्य और कर्मठ महापुरुष अपना कर्म छोड़कर राख मलकर ~~धरती~~ पर्वत पर आ बैठे हैं तो धरती का क्या हाल हो सकता है?

इस प्रकार कर्तव्यपालन के साथ भक्ति सिखपंथ में मुक्ति का मार्ग है।

६— सिख पंथ जातपात धार्मिक कर्मकांडो को अस्वीकार करता है - सिख पंथ का मूल उपदेश है - मानस की जात सभै एके पहचानबो' सभी मनुष्य एक है इसलिए कोई छोटी कोई बड़ी जाति नहीं है जब गुरु गोविंद सिंह ने 1699 बैसाखी के दिन खालसा की सर्जना की तो पहले पांच सिख जो खालसे बने वो 5 देश के अलग अलग स्थानों के अलग अलग जातियों के लोग थे। इसी प्रकार गुरु ग्रन्थ साहिब में भक्त संतरचना

1

कबीर, रैदास, नामदेव आदि का गुरुओं के तुल्य आदर सम्मान, स्तुति की जाती है। इसके अलावा सिख पंथ के उदय का मूल कारण ही यह था कि धार्मिक पाखंड के नाम पर किए जाने वाले व्यर्थ के कर्मकांडो से मुक्ति, इसलिए सिख रीति रिवाज परंपराए बेहद सरल सहज और कर्मकांड विहिन है।

6- सिख पंथ में सेवा को सर्व प्रमुख माना जाता है -

सिख पंथ की यह मान्यता है कि गुरु की भक्ति में सेवा ऐसा साधन है जो साधक को अहं से मुक्त कर देता है इसलिए गुरु के द्वार या मंदिर पर सेवा साधना जरूरी है। सिख गुरुओं ने लंगर प्रथा का प्रारंभ किया जहां कोई भी व्यक्ति सेवा भी कर सकता है लंगर प्रसाद का ग्रहण भी कर सकता है। सिख पंथ में सेवा की परपंरा प्रारंभ से लेकर आज तक चली आ रही है। आज भी देखा जाता है कि मानवीय त्रासदियो में सबसे पहले सिख सेवा करने पहुंच जाते है। गुरु गोविंद सिंह के समय युद्ध उपरांत भाई कन्हैया घायल सैनिको को जल पिलाने की सेवा करता था।

यही सिख पंथ की प्रमुख विशेषताएं है।